माना जाय, तो यह प्राकृत-जगत् उस केन्द्र के १८० कोण का प्रकाश है और शेष १८० कोण वैकुण्ठ-जगत् है। यह प्राकृत-जगत् उस वैकुण्ठ-जगत् की उल्टी छाया है। अतएव वैकुण्ठ-जगत् में भी निःसन्देह इसी के समान वैचित्री है; परन्तु वहाँ की वैचित्री सत् है। प्रकृति परमेश्वर की बहिरंगा शक्ति है तथा पुरुष परमेश्वर स्वय हैं, जैसा भगवद्गीता में वर्णन है। यह सृष्टि प्राकृत है, इसलिए क्षणभंगुर है। प्रतिबिम्ब सदा क्षणभंगुर ही होता है—कभी दृष्टिगोचर होता है तो कभी नहीं। परन्तु इस प्रतिबिम्ब का स्रोत शाश्वत् है। असली वृक्ष की प्राकृत छाया को काटना है। वास्तव में वेद का तात्पर्य वही जानता है, जो इस प्राकृत-जगत् की आसक्ति का छेदन कर सकता है। इस पद्धति को जानने वाला वास्तव में वेदज्ञ है। वेद के कर्मकाण्ड की ओर आकर्षित होना तो मानो वृक्ष के सुन्दर हरे-हरे पत्तों में रमना है। ऐसा व्यक्ति वेद के प्रयोजन को ठीक-ठीक नहीं जानता। जैसा स्वयं श्रीभगवान् ने प्रकट किया है, वेद का तात्पर्य इस संसाररूप प्रतिबिम्बित वृक्ष को काट कर वैकुण्ठ-जगत् रूप असली वृक्ष को प्राप्त करना है।

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके।।२।।

अधः=नीचे; **च**=तथा; **ऊर्ध्वम्**=ऊपर की ओर; **प्रसृताः**=फैली हुई हैं; **तस्य**=उस संसार-वृक्ष की; **शाखाः**=शाखाएँ; **गुणप्रवृद्धाः**=तीनों गुणों रूप जल के द्वारा बढ़ी हुई; **विषय**=इन्द्रियविषयरूप; **प्रवालाः**=पत्ते वाली; **अधः**=नीचे; **च**=तथा; **मूलानि**=जड़; **अनुसंततानि**=विस्तृत; **कर्म**=कर्म के अनुसार; **अनुबन्धीनि**=बाँधने वाली; **मनुष्यलोके**=मनुष्य योनि में।

अनुवाद

माया के तीनों गुणों रूप जल से बढ़ी हुई इस संसाररूप वृक्ष की शाखायें ऊपर-नीचे सब ओर फैली हुई हैं। इन्द्रियविषय ही इसके पत्ते हैं तथा मनुष्ययोनि में कर्म के अनुसार बाँधने वाली इसकी जड़ें नीचे की ओर भी फैल रही हैं।।२।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् संसाररूप पीपल के पेड़ का आगे वर्णन करते हैं। इसकी शाखाएँ सब दिशाओं में विस्तृत हैं। नीचे की ओर मनुष्य, पशु, आदि अनेक जीव-योनियों की अभिव्यक्ति है। ये योनियाँ शाखाओं के अधोभाग में स्थित हैं, जबकि देव, गन्धर्व, आदि उत्तम जीव-योनियाँ ऊपर की ओर हैं। जल द्वारा वृक्ष के संवर्धन के समान, यह संसार-वृक्ष तीनों गुणों से बढ़ता है। भूमि कहीं ऊसर होती है, तो कहीं हरी-भरी। इसी प्रकार, प्रकृति के गुणों के अनुपात में नाना प्रकार की जीवयोनियाँ प्रकट होती हैं।

इन्द्रियविषय इस संसार-वृक्ष के पत्ते हैं। प्रकृति के गुणों के बढ़ने से विविध इन्द्रियाँ विकसित होती हैं, जिनके द्वारा नाना विषय भोगे जाते हैं। कर्ण, नासेन्द्रिय, नेत्र,